पिता अब्राहम

अध्याय 2

अब्राहम का जीवन : मूल अर्थ

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
संबंध 2
परिभाषा 2
प्रकार 3
पृष्ठभूमियाँ 3
आदर्श 4
पूर्वाभास 5
सारांश 7
निहितार्थ 8
आधारभूत प्रभाव 8
मुख्य विषय 9
ईश्वरीय अनुग्रह 9
अब्राहम की विश्वासयोग्यता 10
अब्राहम के लिए आशीषें 10
अब्राहम के द्वारा आशीषें 11
पाँच चरण 12
पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभव 12
दूसरे लोगों के साथ आरंभिक संबंध 13
परमेश्वर के साथ वाचा 14
दूसरे लोगों के साथ बाद के संबंध 15
वंश और मृत्यु 16
उपसंहार 18

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पिता अब्राहम

अध्याय दो

अब्राहम का जीवन : मूल अर्थ

परिचय

यीशु मसीह के सच्चे अनुयायी पवित्रशास्त्र से प्रेम करते हैं। हम पाते हैं कि यह कई अलग और व्यक्तिगत तरीकों से हमारे जीवनों से बात करता है। पवित्रशास्त्र के बारे में यह एक बहुमूल्य सत्य है जिसे मसीहियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। परंतु बहुत बार पवित्रशास्त्र का यह अद्‌भुत व्यक्तिगत पहलू उस बात से हमारा ध्यान हटा देता है जिसे हमें सदा याद रखना होता है। बाइबल को प्रत्यक्ष रूप से आपके या मेरे लिए नहीं लिखा गया था। पहला, पवित्रशास्त्र उन लोगों के लिए लिखा गया था जो हजारों वर्ष पहले रहते थे। इसलिए जब हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि पवित्रशास्त्र आज हमारे जीवनों में कैसे लागू होता है, तो हमें सदैव अपने आधुनिक प्रयोगों को पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ पर आधारित करने में सावधान रहना चाहिए।

यह उन अध्यायों की श्रृंखला है जिसका शीर्षक हमने *पिता अब्राहम* दिया है। और इन अध्यायों में हम अब्राहम के जीवन के उस विवरण की खोज कर रहे हैं जो उत्पत्ति 11:10-25:18 में पाया जाता है।

यह तीन परिचयात्मक अध्यायों का दूसरा अध्याय है, और हमने इस अध्याय का शीर्षक "अब्राहम का जीवन : मूल अर्थ" दिया है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि अब्राहम के जीवन की कहानियों को उस परिपेक्ष्य में पढ़ना कितना महत्वपूर्ण है कि वे कब और किन लोगों के लिए लिखी गई थीं। हम इस्राएल राष्ट्र पर पड़े उस मूल प्रभाव की खोज करेंगे जिसके लिए इन कहानियों को रखा गया था, जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा के देश की ओर जाते हुए मूसा का अनुसरण कर रहे थे।

हम दो मुख्य विषयों को देखने के द्वारा उत्पत्ति 11:10-25:18 के मूल अर्थ की खोज करेंगे। पहला, हम यह दर्शाएँगे कि मूसा ने अब्राहम के जीवन के इतिहास और अपने मूल श्रोताओं के अनुभवों के बीच किस प्रकार संबंधों को स्थापित किया। और दूसरा, हम इन संबंधों के कुछ निहितार्थों को सारगर्भित करेंगे जो मूल श्रोताओं से संबंधित थे।

इससे पहले कि हम अब्राहम के जीवन के मूल अर्थ को देखें, हमें एक क्षण लेकर उसकी समीक्षा करनी चाहिए जो हमने पिछले अध्याय में देखा था। अब तक हमने दो महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित किया है। पहला, हमने सुझाव दिया था कि उत्पत्ति 12:1-3 अब्राहम की कहानी के चार मुख्य विषयों को प्रकट करते हैं। अब्राहम के प्रति परमेश्वर की दया (वे कई तरीके जिनके द्वारा परमेश्वर ने कुलपिता के प्रति दया दिखाई), परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनने की अब्राहम की जिम्मेदारी (वे कई तरीके जिनमें परमेश्वर ने अब्राहम से अपनी आज्ञा मानने की अपेक्षा की), अब्राहम के लिए परमेश्वर की आशीषें (महान राष्ट्र, कई वंशज, एक देश, और एक महान नाम की प्रतिज्ञाएँ) और अब्राहम के माध्यम से दूसरों के लिए परमेश्वर की आशीषें (यह प्रतिज्ञा कि अब्राहम संसार के सब कुलों के लिए आशीष ठहरेगा)।

इसके अतिरिक्त, हमने यह भी देखा था कि इन मुख्य विषयों ने उस तरीके को आकार दिया जिसमें अब्राहम की कहानी को उत्पत्ति में बताया गया था। हमने सीखा था कि अब्राहम की कहानी पाँच समान चरणों में विभाजित होती है। पहला, 11:10-12:9 में हम अब्राहम की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभवों के साथ आरंभ करते हैं। दूसरा, 12:10-14:24 में कई घटनाएँ अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के आरंभिक व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। अब्राहम के जीवन का तीसरा और मध्य का भाग उस वाचा पर ध्यान केंद्रित करता है जो परमेश्वर ने 15:1-17:27 में अब्राहम के साथ बाँधी थी। अब्राहम के जीवन का चौथा भाग 18:1-21:34 में अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के बाद के व्यवहारों की ओर मुड़ता है। और 22:1-25:18 में पाँचवाँ भाग अब्राहम के वंश और उसकी मृत्यु के बारे में है।

ये पाँच चरण कुलपिता के जीवन को एक समान पद्धति में दर्शाते हैं। 15:1-17:27 का तीसरा भाग, जो अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के विषय में है, अब्राहम के जीवन के केंद्र बिंदु के रूप में काम करता है। दूसरा और चौथा भाग एक दूसरे के अनुरूप है क्योंकि ये दोनों अन्य लोगों के साथ अब्राहम के व्यवहारों पर ध्यान देते हैं। पहले और अंतिम भाग अब्राहम के जीवन के दो सिरों को प्रदान करने के द्वारा एक दूसरे से मेल खाते हैं, और अतीत से लेकर भविष्य तक उसके पारिवारिक वंश को खोजते हैं।

कई रूपों में, इस अध्याय का निर्माण अब्राहम के जीवन की संरचना और विषय-वस्तु में इन अंतर्दृष्टियों पर होगा। इस समीक्षा को ध्यान में रखते हुए, हम इस अध्याय की मुख्य बातों की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं, अर्थात् उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के जीवन का मूल अर्थ। आइए, अब्राहम के बारे में कहानियों और इन कहानियों को सबसे पहले प्राप्त करनेवाले इस्राएलियों के अनुभवों के बीच पाए जानेवाले संबंधों की खोज करते हुए आरंभ करें।

संबंध

अध्यायों की इस श्रृंखला में हम अब्राहम के जीवन की हमारी व्याख्या को इस पूर्वधारणा पर बना रहे हैं कि ये कहानियाँ मूल रूप से मूसा के दिनों में लिखी गई थीं, और कि ये कहानियाँ मूल रूप से आज वैसी ही हैं जैसी उस समय थीं। अधिकांश आलोचनात्मक विद्वान मानते हैं कि ये कहानियाँ मूसा के दिनों में नहीं लिखी गई थीं, परंतु पुराने नियम के अन्य भागों और साथ ही स्वयं यीशु ने भी बल दिया कि मूसा ने ही उत्पत्ति की पुस्तक लिखी थी, और इसी कारण आधुनिक मसीहियों ने इस पुस्तक के लेखक के रूप में मूसा को प्रमाणित किया है। परंतु इस श्रृंखला में हम एक और कदम आगे बढ़ना चाहते हैं। हम न केवल इस तथ्य को समझना चाहते हैं कि मूसा ने इन कहानियों को लिखा; बल्कि हम यह भी जानना चाहते हैं कि उसने उन्हें क्यों लिखा। अब्राहम के जीवन के विषय में उसका दृष्टिकोण क्या था? इनको लिखने में उसका क्या उद्देश्य था? अब्राहम के जीवन के मूल अर्थ को खोजना आरंभ करने का एक सबसे अच्छा तरीका उन तरीकों की खोज करना होगा जिनमें मूसा ने अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों को अपने मूल श्रोताओं के अनुभवों के साथ जोड़ा था, अर्थात् उन इस्राएलियों के अनुभवों के साथ जिन्होंने मिस्र देश से निकलकर प्रतिज्ञा के देश में जाने के लिए उसका अनुसरण किया था।

यह खोजने के लिए कि मूसा ने अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों को अपने मूल श्रोताओं के साथ कैसे जोड़ा, हम तीन विषयों पर विचार करेंगे : पहला, हम देखेंगे कि जब हम इन संबंधों की बात करते हैं तो उनसे हमारा क्या तात्पर्य है। दूसरा, हम संबंधों के कुछ ऐसे प्रकारों को देखेंगे जो अब्राहम के जीवन की कहानियों में पाए जाते हैं; और तीसरा, हम अब्राहम के जीवन की कहानी की संरचना के प्रत्येक पाँच मुख्य चरणों को देखने के द्वारा इन कहानियों में निहित संबंधों को सारगर्भित करेंगे। आइए इससे आरंभ करें कि जब हम संबंधों के बारे में बात करते हैं तो उनसे हमारा क्या अर्थ है।

परिभाषा

कई रूपों में, जब मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में अपना इतिहास लिखा, तो उसने स्वयं को ऐसी परिस्थिति में पाया जिसमें बाइबल की कहानियों के सभी लेखक स्वयं को पाते हैं। वह दो संसारों के बीच खड़ा था। एक ओर, मूसा ने उसके विवरण को प्राप्त किया, जिसे हम "प्राचीन संसार," अर्थात् अब्राहम का संसार कहेंगे। अब्राहम के जीवन में 500 से 600 साल पहले क्या हुआ था उसे इसके बारे में परंपराओं और परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से पता था। इस भाव में, मूसा ने पहले अब्राहम के जीवन के प्राचीन संसार के साथ कार्य किया।

परंतु दूसरी ओर, मूसा ने उस संसार के साथ भी कार्य किया जिसमें वह रहता था, जिसे हम "उनका संसार," अर्थात् मूसा और उसका अनुसरण करनेवाले इस्राएलियों का संसार कह सकते हैं। उस समय परमेश्वर के लोगों का अगुवा होने के नाते, मूसा ने अपने संसार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अब्राहम के जीवन के प्राचीन संसार के बारे में अपनी कहानियों को लिखा।

जब मूसा ने अब्राहम के जीवन के "उस संसार" और "उनके संसार" (अपने समकालीन संसार) के बीच मध्यस्थता की, तो उसने कुलपिता के जीवन और अपने श्रोताओं के जीवनों के बीच संबंधों को दर्शाया ताकि वे उन कहानियों की प्रासंगिकता को देख सकें जो उसने लिखी थीं। कहने का अर्थ यह है, मूसा ने अपनी कहानियों को ऐसे चुना और आकार दिया कि उसका अनुसरण कर रहे इस्राएलियों के लिए यह देखना संभव हो गया कि अब्राहम के जीवन और उनके जीवनों में संबंध थे। अधिकतर मूसा ने ऐसा लिखने के द्वारा किया ताकि उसके श्रोता अब्राहम और उनके अपने समकालीन अनुभवों के बीच समानताओं और विपरीतताओं को देख सकें। कभी-कभी ये समानताएँ और विपरीतताएँ बहुत ही कम थीं और कई बार वे व्यापक स्तर पर थीं, परंतु प्रत्येक घटना में मूसा ने किसी न किसी तरह से अब्राहम के जीवन और अपने मूल श्रोताओं के जीवनों के बीच इस प्रकार के संबंधों की ओर ध्यान खींचा।

अब जबकि हमने संबंधों और मूल अर्थ के आधारभूत विचार को देख लिया है, इसलिए आइए अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ें, संबंधों के ऐसे प्रकार जिन्हें मूसा ने अब्राहम के जीवन और अपने मूल इस्राएली श्रोताओं के अनुभवों के बीच स्थापित किए थे।

प्रकार

यदि किसी भी कहानी को अपने पाठकों के लिए प्रासंगिक बनना है, तो उसे ऐसे संसार को दिखाना चाहिए जिसे उसके पाठक समझ सकें। यदि कहानी का संसार वास्तविक संसार से बिल्कुल अलग है, यदि पाठक कहानी के पात्रों और विषयों से जुड़ नहीं सकते, तो कहानी अपना संदेश नहीं दे पाएगी। या इस अध्याय के शब्दों में कहें तो, यदि अब्राहम का "वह संसार" मूसा और इस्राएलियों के "उनके संसार" से बिल्कुल अलग होता, तो अब्राहम के बारे में बताई गई कहानियाँ इस्राएलियों के लिए सार्थक या प्रासंगिक नहीं होतीं। इसलिए मूसा ने अब्राहम के संसार और इस्राएलियों के संसार के बीच संबंधों को दर्शाने में कड़ा परिश्रम किया जो प्रतिज्ञा के देश की ओर बढ़ रहे थे।

इस अध्याय में हमारे सामने प्रश्न यह है कि मूसा ने इन संबंधों को कैसे स्थापित किया। उसने अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों की रचना कैसे की ताकि वे उसके पाठकों के संसार के साथ जुड़ सकें? जैसे-जैसे हम इस श्रृंखला में आगे बढ़ते हैं, तो हम देखेंगे कि मूसा ने अपने विवरणों को तीन मुख्य तरीकों से इस्राएलियों के अनुभवों के साथ जोड़ा था। पहला, उसने अपनी कहानियों को लिखा जिससे उन्होंने इस्राएलियों को उन बातों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों के बारे में बताया जिनका उन्होंने अनुभव किया था। और दूसरा, उसने लिखा जिससे उसके विवरणों ने इस्राएलियों को अनुसरण करने या न करने के आदर्श या उदाहरण प्रदान किए। और तीसरा, उसने यह दिखाने के लिए लिखा कि कुलपिता के कई अनुभव इस्राएलियों के अनुभवों के पूर्वाभास थे। क्योंकि हम भविष्य के अध्यायों में संबंधों के इन प्रकारों का उल्लेख कई बार करेंगे, इसलिए हमें इन तीनों तकनीकों का परिचय देना चाहिए जिनका प्रयोग मूसा ने अपने मूल श्रोताओं के लिए अब्राहम के जीवन की प्रासंगिकता को दिखाने के लिए किया था। आइए सबसे पहले देखें कि मूसा के समय में इस्राएलियों के अनुभवों के लिए कैसे अब्राहम के जीवन ने पृष्ठभूमियाँ प्रदान कीं।

पृष्ठभूमियाँ

कई रूपों में, इसे पहचानना सभी संबंधों में सबसे सरल है। अपने द्वारा अनुभव की हुई बातों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों को समझाने के मुख्य उद्देश्य के लिए लोगों द्वारा एक दूसरे को कहानियाँ बताना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बहुत सामान्य बात है। माता-पिता अक्सर अपने बच्चों के साथ ऐसा करते हैं, शिक्षक अपनी शिक्षाओं को ऐसे प्रस्तुत करते हैं, पासवान, और राजनीतिक नेता भी ऐसा ही करते हैं। हम अक्सर उस तरीके की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा अपने श्रोताओं के साथ कहानियों को जोड़ते हैं जिसमें वे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं।

अब अब्राहम के जीवन के संदर्भ में हम इस संबंध का वर्णन इस रूप में कर सकते हैं : हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों के संबंध को तब पाते हैं जब मूसा ऐसे तरीकों की ओर संकेत करता है जिनमें इस्राएल के अनुभव ऐतिहासिक रूप से अब्राहम के जीवन की घटनाओं पर स्थापित थे। उदाहरण के लिए, उस तरीके को देखें जिसमें मूसा ने इस्राएल की मातृभूमि के रूप में कनान को देखने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया। आप स्मरण करेंगे कि निर्गमन के दौरान कई बार इस्राएली लोग इस बात से हैरान थे कि उन्हें कनान देश को क्यों जाना था। मूसा ने उन्हें उस देश में प्रवेश करने से पहले ही रुकने की अनुमति क्यों नहीं दी?

कई अवसरों पर मूसा ने अब्राहम के जीवन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विवरणों को प्रदान करने के द्वारा इसी विषय को संबोधित किया। संक्षेप में, उसने दिखाया कि परमेश्वर ने विशेष रुप से अब्राहम को कनान के रूप में एक मातृभूमि दी थी ताकि इस्राएली देख सकें कि क्यों उसने इस बात पर बल दिया कि कनान उनकी भी मातृभूमि था। उदाहरण के लिए, हम उत्पत्ति 15:18 में इन वचनों को पढ़ते हैं जो परमेश्वर ने अब्राहम से कहे थे :

> मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है . . . मैं ने तेरे वंश को दिया है। (उत्पत्ति 15:18-21)

इस अनुच्छेद ने मूसा के इस बल के उद्गम या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्थापित कर दिया कि कनान पर इस्राएल का अधिकार है। परमेश्वर ने वह देश इस्राएल के महान कुलपिता को दिया था और उसने यह उनके वंशज होने के नाते उन्हें भी दे दिया था, इसलिए किसी और देश में बसना सही नहीं होगा।

जब हम अब्राहम के जीवन के और अधिक विवरणों को खोजते हैं तो हम देखेंगे कि मूसा ने बार-बार ऐसी ही ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों की ओर संकेत किया है। मूसा द्वारा अपने समय में इस्राएल के साथ अब्राहम के जीवन के संबंध को दर्शाने का दूसरा मुख्य तरीका उन्हें आदर्श दिखाने के द्वारा था। आइए देखें कि इन कहानियों में आदर्शों ने कैसे कार्य किया।

आदर्श

मूसा नहीं चाहता था कि उसके मूल पाठक अब्राहम की कहानियों को केवल एक पृष्ठभूमि की जानकारी के रूप में प्राप्त करें; उसने कुलपिता के जीवन में कई परिस्थितियों का वर्णन किया ताकि वे अब्राहम के जीवन की परिस्थितियों और अपनी परिस्थितियों के बीच बहुत सी समानताओं को देख सकें। इन समानताओं ने मूसा के श्रोताओं के लिए नैतिक विषयों को उठाया। मूसा ने दर्शाया कि इन समानताओं ने इस्राएल के लिए अनुसरण करने या ठुकरा देने के उदाहरणों को देखना संभव बना दिया।

आदर्शों या उदाहरणों को प्रदान करने के लिए कहानियों को बताना अपने श्रोताओं के साथ कहानियों को जोड़ने का एक सामान्य तरीका है। ऐसा हर समय होता है। जब हम कार्यस्थल पर किसी व्यक्ति को यह काम या वह काम न करने की चेतावनी देते हैं, तो हम अक्सर उस बारे में एक कहानी को जोड़ते हैं कि पिछली बार जब किसी ने यह गलती की थी तो क्या हुआ था। यदि हम बच्चों को सिखाते हैं कि स्कूल में उन्हें क्यों मेहनत करनी चाहिए, तो अक्सर हम निर्देश के साथ ऐसी कहानियों को जोड़ देते हैं जो ऐसे लोगों के उदाहरण देती हैं जिन्होंने स्कूल में कड़ी मेहनत के कारण बहुत उन्नति प्राप्त की थी।

मूसा ने अपने मूल इस्राएली श्रोताओं के साथ अब्राहम के बारे में लिखी अपनी कहानियों को जोड़ने के लिए अक्सर यही किया। उसने अब्राहम की कहानी प्रस्तुत की ताकि उसके चरित्र इस्राएलियों

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के लिए अनुसरण करने या ठुकरा देने के आदर्शों के रूप में कार्य करें। उदाहरण के लिए इस पर विचार करें, मूसा ने किस प्रकार कनान देश में रह रहे कनानियों के खतरे के विरुद्ध इस्राएलियों को साहस रखने के लिए प्रोत्साहित किया था। हम गिनती और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों से जानते हैं कि मूसा का अनुसरण करनेवाले इस्राएलियों ने कनान देश में प्रवेश करने से इनकार कर दिया था क्योंकि उस देश में शक्तिशाली कनानी लोग रहते थे। उनके मन डर से घबरा गए थे क्योंकि उनके लिए कनानी लोग अपराजेय शत्रु प्रतीत हुए। व्यवस्थाविवरण 1:26-28 में हम इस्राएल के गोत्रों से कहे मूसा के इन वचनों को पढ़ते हैं :

> तौभी तुम ने वहाँ जाने से मना किया, किन्तु अपने परमेश्‍वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध होकर अपने अपने डेरे में यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, "यहोवा हम से बैर रखता है, इस कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले आया है कि हम को एमोरियों के वश में करके हमारा सत्यानाश कर डाले। हम किधर जाएँ? हमारे भाइयों ने यह कहके हमारे मन को कच्चा कर दिया है कि वहाँ के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; और वहाँ के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं।" (व्यवस्थाविवरण 1:26-28)

कनानियों के इस डर को संबोधित करने का मूसा का एक तरीका अपने पाठकों को अब्राहम का वह उदाहरण देना था जिसमें उसने अपने समय में कनानियों का सामना किया था। उदाहरण के लिए, हम उत्पत्ति 12:6 में अब्राहम के जीवन में कनानियों के पहले उल्लेख को देखते हैं :

> उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शकेम में . . . पहुँचा। उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे (उत्पत्ति 12:6)।

और इसी तरह से, उत्पत्ति 13:7 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं :

> उस समय कनानी और परिज्जी लोग भी उस देश में रहते थे (उत्पत्ति 13:7)।

मूसा ने प्रतिज्ञा के देश में कनानियों की उपस्थिति का उल्लेख दो बार आस-पास की दो घटनाओं में क्यों किया? उसका एक उद्देश्य इस्राएलियों को यह दिखाना था कि अब्राहम की परिस्थिति उन्हीं के समान थी। कनानी लोग अब्राहम के दिनों में प्रतिज्ञा के देश में थे, ठीक वैसे ही जैसे वे इस्राएल में मूसा के समय में थे। फिर भी, अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया और साहस के साथ उस देश को गया जहाँ कनानी लोग रहते थे। इस तरह से मूसा ने अपने पाठकों को प्रोत्साहित किया कि यद्यपि कनानी लोग वहां रहे रहे थे, फिर भी वे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के द्वारा और उस देश में प्रवेश करने के द्वारा अब्राहम के साहस का अनुकरण करें। इस तरह से अब्राहम उनके लिए अनुसरण करने का उदाहरण बन गया।

जब हम अब्राहम के जीवन से होते हुए आगे बढ़ रहे हैं, तो हम कई ऐसे अनुच्छेदों को पाएँगे जो सकारात्मक और नकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। तीसरा, परंतु ऐसे समय भी थे जब मूसा ने यह दिखाने के द्वारा अपने पाठकों के जीवनों के साथ अब्राहम के जीवन को जोड़ा कि कैसे कुलपिता के जीवन की घटनाओं ने उन घटनाओं का पूर्वाभास प्रदान किया जो उसके समय में हुईं।

पूर्वाभास

कई रूपों में, अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों का संबंध कहानी और उसके श्रोताओं के बीच बहुत कम समानता की मांग करता है; उदाहरण के प्रासंगिक होने के लिए कहानी और श्रोताओं के बीच उदाहरण या आदर्श अधिक समानता की मांग करते हैं। परंतु पूर्वाभास तभी घटित

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

होता है जब बहुत सी समानताएँ होती हैं, इतनी अधिक कि अब्राहम का "वह संसार" इस्राएल के "उनके संसार" जैसा ही दिखाई देता हो। अब इस तरह का व्यापक संबंध अब्राहम के जीवन की कहानियों में कभी-कभी ही पाया जाता है, परंतु समय-समय पर मूसा ने अब्राहम के समय का वर्णन ऐसे रूपों में किया जो उसके अपने समय की घटनाओं के बहुत ही सदृश्य थे।

हममें से कईयों ने यह कहावत सुनी है, "इतिहास अक्सर स्वयं को दोहराता है।" निस्संदेह, हम सब जानते हैं दो ऐतिहासिक घटनाएँ कभी बिल्कुल एक जैसी नहीं हो सकतीं। परंतु कभी-कभी घटनाएँ इतनी समान होती हैं कि दूसरी घटना पहली घटना का दोहराव ही प्रतीत होती है। जब बाइबल के लेखकों ने देखा कि अतीत में हुई घटनाएँ उनके श्रोताओं के जीवनों में फिर से होती प्रतीत हो रही हैं, तो उन्होंने अक्सर इस संबंध को स्पष्ट किया। और इस शाब्दिक तकनीक को पूर्वाभास कहा जाता है।

पूर्वाभास का एक उदाहरण इस प्रचलित घटना में दिखाई देता है जो उत्पत्ति 15:1-21 में परमेश्वर के साथ अब्राहम की वाचा का वर्णन करती है। परमेश्वर ने अब्राहम को आश्वासन दिया कि एक दिन उसके वंशज वाचाई रीति की तैयारी करने के लिए उसे पुकारने के द्वारा कनान देश को प्राप्त कर लेंगे। अब्राहम ने कुछ जानवरों को दो भाग में काटकर और मार्ग के दोनों ओर उन कटे टुकड़ों को रखने के द्वारा तैयारी की। जब कुलपिता सो गया तो उसने किसी ऐसी चीज का दर्शन देखा जो उस अनुभव से बहुत मिलता जुलता है जो मूल श्रोताओं को अपने समय में हुआ था। उत्पत्ति 15:17 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> और ऐसा हुआ कि जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया, तब एक अंगीठी जिसमें से धूआँ उठता था और एक जलती हुई मशाल दिखाई दी जो उन टुकड़ों के बीच में से होकर निकल गई (उत्पत्ति 15:17)।

इस अनुच्छेद के बड़े संदर्भ में हम पाते हैं कि इस धूआँ उठानेवाली अंगीठी और जलती हुई मशाल ने जानवरों के कटे मांस के बीच से स्वयं परमेश्वर के गुजरने को एक आश्वासन के रूप में प्रस्तुत किया कि वह अब्राहम के वंशजों को निश्चित रूप से प्रतिज्ञा का देश देगा।

अब इस तस्वीर को देखो। उत्पत्ति 15:17 में परमेश्वर अब्राहम को आश्वस्त करने के लिए उसके सामने से धूआँ उठाती हुई आग के रूप में गुजरा कि वह उसके वंशजों को प्रतिज्ञा का देश देगा। अब, हम जैसे आधुनिक पाठकों के लिए यह विचित्र हो सकता है कि परमेश्वर ने धूएँ और आग के रूप में प्रकट होकर अब्राहम को आश्वस्त किया। परंतु जब हम याद करते हैं कि मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में उन इस्राएलियों के लिए लिखा जो उसके प्रतिज्ञा के देश की ओर जाने के लिए उसका अनुसरण कर रहे थे, तो यह आश्चर्य की बात बिल्कुल नहीं लगती कि उसने इस विवरण को शामिल किया। इस्राएलियों की पूरी यात्रा के दौरान परमेश्वर इस्राएलियों के सामने ऐसे प्रकट हुआ जो धूआँ उठानेवाली अंगीठी और जलती हुई मशाल के समान था। उस महिमामय बादल में जिसने प्रतिज्ञा के देश की ओर उनकी अगुवाई की, परमेश्वर धूएँ और आग के समान उनके सामने भी प्रकट हुआ।

अतः इस रीति से अब्राहम के सामने परमेश्वर के प्रकटीकरण ने उस रीति का पूर्वाभास कराया जिसमें वह मूसा के समय में इस्राएलियों के सामने प्रकट हुआ। और जब अब्राहम ने देश में बसने का आश्वासन पाया क्योंकि परमेश्वर इस रीति से उसके सामने से गुज़रा था, तो इस्राएलियों ने भी इस कहानी को सुनने के द्वारा अपने समय में देश में बसने का आश्वासन प्राप्त किया होगा।

एक और अधिक व्यापक पूर्वाभास मिस्र से अब्राहम के छुटकारे की कहानी में घटित होता है जिसे हम उत्पत्ति 12:10-20 में देखते हैं। इस अनुच्छेद को मिस्र के विषय में इस्राएलियों के दृष्टिकोण में उनका मार्गदर्शन करने के लिए लिखा गया था। इस विषय में, मूसा ने इस पूरी घटना को इसलिए लिखा ताकि यह उसकी अगुवाई में इस्राएलियों के अनुभव के साथ काफी समानता में दिखे। उत्पत्ति 12:10-20 में कनान देश में अकाल पड़ने के कारण अब्राहम ने मिस्र देश की ओर अपनी यात्रा को आरंभ किया, जब

फिरौन ने सारा को अपने हरम में ले लिया तो मिस्र में उसे अधिक समय तक रुकना पड़ा, परंतु परमेश्वर ने फिरौन के घराने पर महामारियों को भेजने के द्वारा अब्राहम को छुड़ाया। इसके बाद फिरौन ने अब्राहम को मिस्र से बाहर भेज दिया और अब्राहम बड़े धन के साथ मिस्र से चला गया।

अब्राहम के बारे में यह कहानी स्पष्ट रूप से कई पीढ़ियों बाद के इस्राएल देश के अनुभव का पूर्वाभास प्रदान करने के लिए रची गई थी। अब्राहम के समान, वे भी कनान में अकाल पड़ने के कारण मिस्र को गए थे, उन्हें भी वहाँ फिरौन के द्वारा रोककर रखा गया था, उन्हें भी फिरौन के घराने पर परमेश्वर द्वारा महामारियों को भेजने के द्वारा छुड़ाया गया था, फिरौन ने इस्राएलियों को छोड़ने का आदेश दिया था, और मिस्रियों के धन को लूटने के बाद इस्राएल मिस्र से चला गया था। मूसा ने जानबूझकर इस विवरण को ऐसा आकार दिया ताकि यह उसके श्रोताओं के अनुभवों का पूर्वाभास कराए। अब्राहम की कहानियों में इस तरह का व्यापक पूर्वाभास बहुत ही कम है, परंतु अब्राहम की कहानी में ऐसे संबंध इधर-उधर दिखाई देते हैं।

जब हम अब्राहम के जीवन को पढ़ते हुए आगे बढ़ते हैं तो हम तीनों संबंधों को भिन्न तरीकों में और भिन्न समयों में देखेंगे। इस्राएलियों को उनके अनुभवों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमियाँ प्रदान करने के द्वारा, उन्हें अनुसरण करने और ठुकरा देने के आदर्श प्रदान करने के द्वारा, और यह दिखाने के द्वारा कि किस तरह अब्राहम के जीवन ने उनके कई अनुभवों का पूर्वाभास कराया, मूसा ने अब्राहम के जीवन के "उस संसार" को "उनके संसार," अर्थात् अपने मूल श्रोताओं के संसार के साथ जोड़ा।

अब जबकि हमने उन संबंधों के प्रकारों को देख लिया है जिन्हें मूसा ने अब्राहम और अपने इस्राएली श्रोताओं के बीच स्थापित किया था, इसलिए इसे सारगर्भित करना सहायक होगा कि अब्राहम के जीवन का प्रत्येक मुख्य चरण मूल श्रोताओं के जीवनों के साथ कैसे जुड़ा।

सारांश

आपको याद होगा कि अब्राहम का जीवन पाँच सममित चरणों में विभाजित होता है। इन सब खंडों में मूसा ने अब्राहम के बारे में कहानियों को अपने मूल श्रोताओं की परिस्थितियों के साथ जोड़ने के तरीके खोजे।

पहला, मूसा ने अब्राहम की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभवों के बारे में इन तरीकों में बताया जो उन लोगों की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभवों के साथ जुड़ गए, जो मिस्र से निकलकर उसका अनुसरण कर रहे थे। अब्राहम और इस्राएल दोनों एक ही परिवार से आए थे। और अब्राहम तथा इस्राएल दोनों को परमेश्वर द्वारा कनान देश में बसने के लिए बुलाया गया था। अतः मूसा ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमियाँ प्रदान कीं, अब्राहम को एक आदर्श के रूप में रखा, और ऐसे तरीकों को भी दिखाया जिनमें अब्राहम के जीवन ने मूल श्रोताओं के अनुभवों का पूर्वाभास कराया।

दूसरा, मूसा ने दूसरों के साथ अब्राहम के आरंभिक व्यवहारों का वर्णन भी ऐसे तरीकों में किया जो उसके श्रोताओं से जुड़ गए। उसने बताया कि अब्राहम ने मिस्रियों के साथ कैसा व्यवहार किया था क्योंकि इस्राएल ने अपने समय में मिस्रियों के साथ व्यवहार किया था। उसने अब्राहम और लूत के बारे में बताया क्योंकि इस्राएलियों ने लूत के वंशजों, अर्थात् मोआबियों और अम्मोनियों के साथ व्यवहार किया था। उसने पूर्व के राजाओं और सदोम के कनानी राजा के बारे में लिखा क्योंकि इस्राएल के भी विदेशी राजाओं और कनानी नगरों के साथ ऐसी ही अनुभव हुए थे।

तीसरा, मूसा ने अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के बारे में लिखा क्योंकि इस्राएल ने भी परमेश्वर के साथ वाचा बाँधी थी। परमेश्वर के साथ अब्राहम की वाचा ने परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साथ बाँधी गई वाचा का कई भिन्न तरीकों से पूर्वाभास कराया।

चौथा, मूसा ने अन्य लोगों के साथ अब्राहम के बाद के व्यवहारों के बारे में लिखा। उसने सदोम और अमोरा, लूत, और पलिश्ती अबीमेलेक के बारे में लिखा क्योंकि इस्राएल ने अपने समय में ऐसे ही लोगों का सामना किया था : कनानी शहरों, मोआबियों और अम्मोनियों और पलिश्तियों।

और पाँचवाँ, मूसा ने अब्राहम के वंश और मृत्यु के बारे में इस तरीके से लिखा जो उसके इस्राएली पाठकों के साथ जुड़ गया। उसने अब्राहम के विशेष पुत्र और उत्तराधिकारी के रूप में इसहाक पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि उसके इस्राएली श्रोता इसहाक से उत्पन्न हुए थे। उसने सारा के लिए गाड़े जाने के स्थान पर ध्यान आकर्षित किया क्योंकि वह जगह उस देश में थी जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी। उसने अब्राहम के अन्य पुत्रों की ओर ध्यान आकर्षित किया जो अब्राहम के उत्तराधिकारी नहीं थे, विशेषकर इश्माएल की ओर, क्योंकि इस्राएल को अपने दिनों में इश्माएलियों से निपटना था।

अतः हम देखते हैं कि जब मूसा ने अब्राहम के बारे में लिखा तो उसने अपनी कहानियों और अपने इस्राएली श्रोताओं के अनुभवों के बीच कई अलग-अलग संबंधों को स्थापित किया। और उसने ऐसा इस्राएलियों को एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए किया जब वे प्रतिज्ञा के देश की ओर जाते हुए उसका अनुसरण कर रहे थे।

अब जबकि हमने उन मुख्य तरीकों को देख लिया है जिनमें मूसा ने अब्राहम के जीवन को अपने मूल इस्राएली श्रोताओं के साथ जोड़ा, इसलिए हमें मूल अर्थ के बारे में दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने की जरूरत है। मूल श्रोताओं के लिए इन संबंधों के क्या निहितार्थ थे? अब्राहम के जीवन की कहानियों से उन्हें क्या सीखना था?

निहितार्थ

इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि जब लोग उत्पत्ति में अब्राहम के जीवन जैसे जटिल इतिहास को लिखने के लिए समय निकालते हैं, तो उनके पास हर तरह की प्रेरणाएँ और लक्ष्य होते हैं। वे चाहते हैं कि उनके श्रोताओं पर उनकी कहानियों का बहुआयामी प्रभाव पड़े। वास्तव में, जब मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में लिखा था, तो उसके उद्देश्य इतने बहुआयामी थे कि उनको पूरी रीति से खोजना असंभव है, और उन सबको कुछ वाक्यों में कहना तो बिल्कुल असंभव है। परंतु साथ ही, उन मुख्य निहितार्थों को सारगर्भित करना संभव है जिन्हें मूसा चाहता था कि उसके मूल श्रोता अब्राहम के बारे में उसकी कहानियों से सीखें।

हम अब्राहम के जीवन के मूल निहितार्थों की खोज तीन चरणों में करेंगे। पहला, हम उस आधारभूत प्रभाव का वर्णन करेंगे जिसके लिए इन कहानियों की रचना मूल श्रोताओं के लिए की गई थी। दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे इन कहानियों का प्रभाव अब्राहम के जीवन के चार मुख्य विषयों में प्रकट होता है। और तीसरा, हम अब्राहम के बारे में मूसा की कहानियों के प्रत्येक पाँच चरणों के मूल निहितार्थों को सारगर्भित करेंगे। आइए पहले उस आधारभूत प्रभाव को देखें जिसके लिए इन कहानियों की रचना की गई थी।

आधारभूत प्रभाव

बहुत ही सामान्य शब्दों में, अब्राहम की कहानी के उद्देश्य को इस तरह से सारगर्भित करना सहायक है : मूसा ने इस्राएल को यह सिखाने के लिए अब्राहम के बारे में लिखा कि उन्हें क्यों और कैसे मिस्र को पीछे छोड़ना है और प्रतिज्ञा के देश पर विजय पाने की ओर आगे बढ़ना जारी रखना है। दूसरे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शब्दों में, अब्राहम के जीवन में अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने के द्वारा, अब्राहम की कहानियों में अनुसरण करने या ठुकरा देने के आदर्शों या उदाहरणों को पाने के द्वारा, और यह पहचानने के द्वारा कि कैसे अब्राहम के जीवन ने उनके जीवन का पूर्वाभास कराया, मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएली उन तरीकों को देख सके जिनमें उन्हें अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य का अनुसरण करना था।

यद्यपि पवित्रशास्त्र और यहाँ तक कि स्वयं यीशु मसीह की गवाही के आधार पर हम आश्वस्त हो सकते हैं कि उत्पत्ति की पुस्तक मूसा के समय से संबंधित है, फिर भी हमें ध्यान देना चाहिए कि हम पूरी निश्चितता के साथ नहीं कह सकते कि जो कहानियाँ आज हमारे पास हैं उन्हें मूसा ने कब पूरा किया था। चाहे जैसा भी हो, हम यह जरूर कह सकते हैं कि अब्राहम के इतिहास को लिखते समय मूसा का मुख्य विषय किसी भी पीढ़ी के लिए ऐसा ही रहा होगा। उसने उनके हृदयों को मिस्र देश से हटाने और प्रतिज्ञा के देश को प्राप्त करने की ओर लगाने के लिए अब्राहम के बारे में लिखा।

मूल श्रोताओं के लिए इस सामान्य निहितार्थ को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया जा सकता। मूसा ने अपना अनुसरण कर रहे इस्राएल देश को कभी मिस्र न लौटने और कनान पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु लिखा था और यह व्यापक निहितार्थ अब्राहम के जीवन के हमारे आधुनिक प्रयोग में हमारी अगुवाई करता है। मसीही होने के नाते हम एक यात्रा पर हैं, एक ऐसी यात्रा जो वास्तव में उस यात्रा को पूरा करती है जिसे मूसा के समय में इस्राएलियों ने आरंभ किया था। हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की ओर आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए, अब्राहम की कहानियों को उचित रीति से अपने जीवनों में लागू करने के लिए हमें उन तरीकों पर ध्यान देना होगा जिनमें उन्होंने कनान की ओर आगे बढ़ते रहने में मूल श्रोताओं को प्रेरित किया था।

इस महत्वपूर्ण केंद्रबिंदु को थोड़ा और समझने के लिए हमें उत्पत्ति के इस भाग में उन चार मुख्य विषयों की ओर लौटने के द्वारा जिन्हें हम पहले ही पहचान चुके हैं, मूसा के उद्देश्य पर और बारीकी से ध्यान देना चाहिए।

मुख्य विषय

आपको याद होगा कि इस अध्याय में पहले हमने सुझाव दिया था कि उत्पत्ति 12:1-3 कम से कम ऐसे चार विषयों को प्रस्तुत करता है जो कुलपिता-संबंधी इतिहास के इस भाग को स्पष्टता प्रदान करते हैं। ये चार विषय उस केंद्रीय प्रभाव को व्यक्त करते हैं जिनके लिए मूसा ने अपनी कहानियों की रचना की थी। पहला, उसने अब्राहम के प्रति ईश्वरीय अनुग्रह पर ध्यान दिया; दूसरा, उसने अब्राहम की विश्वासयोग्यता पर ध्यान केंद्रित किया; तीसरा, उसका ध्यान अब्राहम की आशीषों पर था; और चौथा, उसने अब्राहम के द्वारा आनेवाली आशीषों पर ध्यान दिया। अब्राहम के विषय में लिखने के मूल उद्देश्य को इन चार विषयों के संदर्भ में सोचना सहायक होता है।

ईश्वरीय अनुग्रह

पहली बात यह है कि मूसा ने उन तरीकों के बारे में लिखा जिनमें परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति दया दिखाई थी।

व्यापक रुप से, हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति बहुत अनुग्रह दिखाया था, परमेश्वर के साथ उसके संबंध के आरंभिक वर्षों में और उसके पूरे जीवनभर के दिन प्रतिदिन के आधार पर भी। मूसा के समय में ईश्वरीय अनुग्रह का उद्देश्य इस्राएलियों को यह स्मरण दिलाना था कि परमेश्वर ने उनके प्रति भी बड़ी दया दिखाई थी। परमेश्वर ने उन पर आरंभिक अनुग्रह किया था जब वह उन्हें मिस्र से सीनै तक ले आया था। और दिन प्रतिदिन, वह उन पर दया करता रहा, तब भी जब वह उन्हें कनान देश पर भविष्य की विजय के लिए तैयार कर रहा था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निर्गमन 19:4 में जो जाने पहचाने शब्द परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर बोले थे, वे इस रीति से परमेश्वर के अनुग्रह को दर्शाते हैं:

> तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ (निर्गमन 19:4)।

दुखद रूप से, जिन इस्राएलियों की अगुवाई मूसा कर रहा था, वे भूल गए थे कि उन्होंने परमेश्वर से कितनी दया प्राप्त की थी। आरंभ में ही उन्होंने शिकायत की कि परमेश्वर और मूसा ने उनसे मिस्र के सुखों को छीनकर उन्हें धोखा दिया था। मरूभूमि में उन्होंने भोजन और पानी के लिए शिकायत की। उनका सोचना था कि जब परमेश्वर ने उन्हें प्रतिज्ञा के देश पर विजय प्राप्त करके उसमें प्रवेश करने के लिए बुलाया था तो वह उनसे एक बड़ी मांग कर रहा था। इसलिए मूसा ने बहुत बार उन तरीकों पर बल दिया जिनमें परमेश्वर ने अब्राहम पर दया की थी, ताकि वह अपने मूल श्रोताओं को उन तरीकों का स्मरण दिलाए जिनमें परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया था, अर्थात् जो बड़ी दया परमेश्वर उन पर बार-बार कर रहा था।

अब्राहम की विश्वासयोग्यता

दूसरा, हमने देखा है कि मूसा ने उन कई तरीकों पर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा जिनमें परमेश्वर ने अब्राहम को अपनी आज्ञाएँ मानने के लिए जिम्मेदार ठहराया था, अब्राहम की विश्वासयोग्यता पर भी बल दिया। मूसा ने बार-बार बल दिया कि परमेश्वर ने कुलपिता से अपनी आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य बनने की अपेक्षा की क्योंकि उसका अनुसरण कर रहे इस्राएलियों के लिए भी यह बिंदु भी प्रासंगिक था। विश्वासयोग्यता की मांग पर दिए गए ध्यान ने भी मूसा के समय के इस्राएलियों से बात की। सुनिए कैसे परमेश्वर ने निर्गमन 19:4-5 में सीनै पर्वत पर इस्राएलियों को संबोधित करना जारी रखा :

> तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे (निर्गमन 19:4-5)।

यहाँ ध्यान दीजिए कि निज धन ठहरने की आशीषें इस्राएल की विश्वासयोग्यता पर निर्भर थीं। यद्यपि परमेश्वर ने उस जाति के प्रति बहुत दया दिखाई थी, फिर भी प्रत्येक पीढ़ी के प्रत्येक व्यक्ति का स्तर इस पर निर्भर करता था कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति कैसे प्रत्युत्तर दिया।

अब जैसा कि हम देख चुके हैं, अब्राहम को दी गई मुख्य जिम्मेदारी यह थी कि वह कनान देश को जाए। मूसा ने इस जिम्मेदारी पर बल दिया क्योंकि वह चाहता था कि उसका अनुसरण करनेवाला इस्राएल भी कनान देश के मार्ग पर बना रहे। और निस्संदेह, जब मूसा ने अब्राहम की अन्य जिम्मेदारियों के बारे में लिखा, तो उसने ऐसा अपने समय के इस्राएलियों को उनकी अन्य कई जिम्मेदारियों को सिखाने के लिए किया। अब्राहम की ओर से विश्वासयोग्यता की बहुत सी मांगों ने इस बात को स्पष्ट रूप से बताया कि मूल श्रोताओं को भी परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति निष्ठावान और विश्वासयोग्य होना था।

अब्राहम के लिए आशीषें

तीसरा, हम अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञात आशीषों के महत्व को भी देख चुके हैं। अब्राहम के बारे में अपनी कहानियों में मूसा ने अब्राहम और उसके वंशजों के लिए एक बड़े देश, समृद्धि, और एक बड़े नाम की प्रतिज्ञात आशीषों पर ध्यान दिया। और कई अवसरों पर हम यह भी देखते हैं कि अब्राहम ने अपने जीवनकाल में ही इन आशीषों का अनुभव कर लिया था। और कई अन्य अवसरों पर

अब्राहम की कहानियों ने आने वाली पीढ़ियों में इन आशीषों की भविष्य की पूर्णताओं पर ध्यान दिया। मूसा ने अब्राहम की आशीषों पर इन रूपों में ध्यान दिया क्योंकि ये आशीषें अब्राहम के वंशजों अर्थात् उन लोगों के लिए भी थीं, जिनकी अगुवाई मूसा कर रहा था। इस्राएल के लोगों से भी बड़ी आशीषों की प्रतिज्ञा की गई थी। जब वे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करेंगे तो वे एक महान राष्ट्र बनेंगे, अभूतपूर्व समृद्धि का अनुभव करेंगे और एक बड़े नाम को प्राप्त करेंगे।

वास्तव में, उत्पत्ति की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक लगभग अब्राहम के समान ही इस्राएल ने भी इन आशीषों के कई अनुभव पहले से ही प्राप्त कर लिए थे। उन्होंने अपने जीवनों में ही इनमें से कुछ प्रतिज्ञाओं की पूर्णताओं को देखना आरंभ कर दिया था। फिर भी, इन आशीषों की बहुत सी ऐसी भावी पूर्णताएँ भी थीं जिनका अनुभव उन्हें प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के बाद करना था। परमेश्वर ने निर्गमन 19:6 में सीनै पर्वत पर इस्राएल की इन भविष्य की आशीषों के बारे में इस प्रकार कहा :

> तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:6)।

मूसा ने अपने समय में इस्राएलियों की आशाओं को बढ़ाने के लिए उन आशीषों के बारे में लिखा जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। जब उन्होंने कुलपिता के लिए परमेश्वर की आशीषों के बारे में पढ़ा, तो वे स्पष्ट रीति से देख पाए कि कैसे परमेश्वर के पास उनके लिए भी बड़ी आशीषें रखी हुई हैं।

अब्राहम के द्वारा आशीषें

चौथा, हम यह भी देख चुके हैं कि अब्राहम की कहानियों ने प्रकट किया कि परमेश्वर की आशीषें कुलपिता के द्वारा पूरे संसार के लिए आएँगी। जैसे कि आपको याद होगा, अब्राहम के द्वारा आनेवाली आशीषें साधारण रीति से नहीं आएँगी। उत्पत्ति 12:3 में हम देखते हैं कि अब्राहम के मित्रों को आशीषित करने और उसके शत्रुओं को शाप देने की प्रक्रिया के द्वारा परमेश्वर अब्राहम को सफलता देगा। विभिन्न प्रकार की घटनाओं में मूसा ने दर्शाया कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम को अपने जीवन काल में ही इस प्रक्रिया का पहले से अनुभव कराया, जब उसने विभिन्न राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करनेवाले अन्य लोगों के साथ बातचीत की। और अब्राहम के जीवन की अपनी कहानियों में कई अवसरों पर मूसा ने दर्शाया कि बहुत सी पूर्णताएँ भविष्य में आएँगी।

मूसा ने इस उद्देश्य पर बल दिया था क्योंकि यह उसके समय में उसका अनुसरण कर रहे इस्राएल के लोगों के लिए बहुत प्रासंगिक था। परमेश्वर ने उन्हें दूसरों के लिए आशीष बनने के द्वारा सफलता का आश्वासन दिया क्योंकि वह उनके मित्रों को आशीष और उनके शत्रुओं को शाप देगा। जब उन्होंने अपने समय में लोगों के विभिन्न समूहों के साथ व्यवहार किया तो उन्होंने भी इन प्रतिज्ञाओं के अनुभव को पहले से प्राप्त कर लिया था। उन्होंने कई अवसरों पर यह देख लिया था कि परमेश्वर ने उनके मित्रों को आशीष दी और उनके शत्रुओं को शाप दिया। और इससे बढ़कर, मूसा ने इन विषयों पर इसलिए भी ध्यान दिया कि वह इस्राएलियों की दृष्टि भविष्य की पूर्णताओं की ओर लगाए जब वे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करते हैं और परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाते हैं। जैसा कि हमने अभी देखा है, निर्गमन 19:6 में परमेश्वर ने इस्राएल से यह कहा :

> तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:6)।

याजकों के राज्य के रूप में राष्ट्र के दर्शन ने केवल यही नहीं दर्शाया कि वह राष्ट्र परमेश्वर की सेवा करते हुए पवित्र लोग बनने के अधिकार के साथ आशीष पाएगा, बल्कि यह भी दर्शाया कि इस्राएल की संतान पूरे जगत में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करेगी। जब मूसा ने इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया, तो अब्राहम के बारे में उसकी कहानियों की रचना उनके मन में इस दर्शन

को स्थापित करने के लिए की गई थी कि कैसे परमेश्वर अपने राज्य को फैलाने में इस्राएल का इस्तेमाल करेगा और इसके फलस्वरूप पूरे जगत में अपनी आशीषों को फैलाएगा।

अब जबकि हमने मूल श्रोताओं के लिए अब्राहम के जीवन के चार मुख्य विषयों के निहितार्थों को देख लिया है, तो आइए उत्पत्ति की पुस्तक में निहित कुलपिता के जीवन की संरचना के प्रत्येक मुख्य चरण को देखने के द्वारा अब्राहम की कहानियों के मूल श्रोताओं पर होनेवाले प्रभाव को संक्षेप में सारगर्भित करें।

पाँच चरण

आपको याद होगा कि अब्राहम के जीवन की कहानियाँ पाँच मुख्य चरणों में विभाजित होती हैं। पहला, 11:10-12:9 में अब्राहम की पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभव; दूसरा, 12:10-14:24 में अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के आरंभिक व्यवहार; तीसरा, 15:1-17:27 में परमेश्वर के द्वारा अब्राहम के साथ बाँधी गई वाचा; चौथा, 18:1-21:34 में अन्य लोगों के प्रतिनिधियों के साथ अब्राहम के बाद के व्यवहार; और पाँचवाँ, 22:1-25:18 में अब्राहम का वंश और उसकी मृत्यु।

इनमें से प्रत्येक मुख्य चरण कई छोटे भागों या घटनाओं में विभाजित होता है। हम उस विषय-वस्तु और कुछ मुख्य निहितार्थों को संक्षेप में बताएँगे जो इन घटनाओं के मूल श्रोताओं के लिए थे जिनके लिए मूसा ने लिखा था।

पृष्ठभूमि और आरंभिक अनुभव

अब्राहम के जीवन के पहले चरण, अर्थात् उसकी पृष्ठभूमि और उसके आरंभिक अनुभवों ने अब्राहम के परिवार और उस समय की कई विशेषताओं को दर्शाया जब परमेश्वर ने पहले पहल अब्राहम को अपनी सेवा में बुलाया था। सामान्य शब्दों में, मूसा ने इस पहले चरण की रचना अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को यह दिखाने के लिए की कि अब्राहम के जीवन की इन घटनाओं से कैसे वे अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में और परमेश्वर से अपनी बुलाहट के बारे में सीख सकते हैं।

यह पहला चरण तीन घटनाओं या भागों में विभाजित होता है। अब्राहम का जीवन उस वंशावली के साथ शुरु होता है जो 11:10-10:26 में अब्राहम की ईश्वरीय रूप से अनुग्रह-प्राप्त वंशावली को प्रस्तुत करती है। ये पद स्थापित करते हैं कि अब्राहम शेम के परिवार का उच्च चरित्र का व्यक्ति था, एक ऐसा परिवार जिसे परमेश्वर के सामने परमेश्वर के विशेष चुने हुए लोगों के रूप में अनुग्रह-प्राप्त स्तर मिला था। बदले में इस वंशावली ने मूसा के मूल इस्राएली श्रोताओं को याद दिलाया होगा कि अब्राहम के पारिवारिक वंशजों के रूप में उन्हें भी यही अनुग्रह-प्राप्त स्तर मिला था। वे परमेश्वर के विशेष रूप से चुने हुए लोग थे।

अब्राहम की पृष्ठभूमि और उसके आरंभिक अनुभवों की दूसरी घटना 11:27-32 में एक अन्य वंशावली है। सारांश में, यह अनुच्छेद तेरह को एक मूर्तिपूजक के रूप में दर्शाता है जिसने कनान देश को जाने का प्रयास तो किया परंतु विफल रहा। मूसा के मूल श्रोताओं ने सरलता से अब्राहम की और अपनी परिस्थितियों के बीच समानता को देखा होगा। उनके माता-पिता भी मूर्ति-पूजा में शामिल रहे थे और कनान देश पहुँचने में विफल रहे थे। इसलिए जैसे अब्राहम को अपने पिता की असफलताओं को दोहराने से बचना था, वैसे ही मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों को भी अपने पूर्वजों अर्थात् निर्गमन की पहली पीढ़ी के मूर्तिपूजकों की असफलताओं को दोहराने से बचना था, जो कनान देश पहुँचने में असफल रहे थे।

अब्राहम की पृष्ठभूमि और उसके आरंभिक अनुभव फिर 12:1-9 में कनान में अब्राहम के प्रवास की कहानी की ओर मुड़ते हैं। परमेश्वर ने अब्राहम को कनान देश को जाने के लिए बुलाया, और कई कठिनाइयों के बावजूद अब्राहम ने परमेश्वर की बुलाहट का पालन किया। लगभग इसी प्रकार, परमेश्वर ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मूसा के मूल इस्राएली श्रोताओं को कनान देश जाने के लिए बुलाया था, और उन्हें भी कई कठिनाइयों के बावजूद इसका पालन करना था। इसलिए कनान में अब्राहम के प्रवास की कहानी का मूल निहितार्थ यह था कि मूसा के समय के इस्राएलियों को भी अब्राहम के कदमों पर चलकर कनान देश में बसना था जैसा कि उसने किया था।

इन तीन भागों के साथ, मूसा ने अब्राहम के जीवन का परिचय दिया और अपने मूल श्रोताओं के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया जब वे परमेश्वर के लिए अपनी सेवा की चुनौतियों का सामना कर रहे थे।

दूसरे लोगों के साथ आरंभिक संबंध

अब्राहम के जीवन के उत्पत्ति के विवरण में दूसरा मुख्य चरण अन्य लोगों के साथ कुलपिता के आरंभिक संबंधों पर बल देता है। ये अध्याय कुलपिता को दूसरे समूहों के लोगों के साथ विभिन्न तरीकों से व्यवहार करते हुए दर्शाते हैं ताकि इससे मूल इस्राएली पाठकों को मार्गदर्शन मिले जब वे दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं।

पहली घटना में, मूसा ने उत्पत्ति 12:10-20 में मिस्र देश से अब्राहम के छुटकारे का वर्णन किया। आपको याद होगा कि अकाल के कारण कुलपिता को मिस्र जाना पड़ा था, परंतु परमेश्वर ने फिरौन के घराने पर महामारी को भेजने के द्वारा उसे मिस्रियों की गुलामी से छुड़ाया। परमेश्वर के महान छुटकारे के कारण अब्राहम ने बड़े धन के साथ मिस्र को छोड़ दिया और कभी वापस नहीं लौटा। अब्राहम ने अच्छी तरह से जान लिया था कि मिस्र उसका घर नहीं था।

मूसा के मूल इस्राएली पाठक देख सके कि उनके अपने अनुभवों ने अब्राहम की कहानी के कई पहलुओं को दर्शाया। वे अकाल के कारण मिस्र देश को गए थे, उन्हें भी छुड़ाया गया था जब परमेश्वर ने मिस्रियों पर महामारियों को भेजा था, और उन्होंने भी मिस्रियों के बड़े धन के साथ मिस्र देश को छोड़ा था। दुखद रूप से, जब इस्राएलियों ने अपनी यात्रा में कठिनाइयों का सामना किया, तो उनमें से कईयों को मिस्र का जीवन अच्छा लगने लगा और उन्होंने वापस लौटना चाहा। इस घटना ने मूल श्रोताओं के समक्ष स्पष्ट कर दिया होगा कि मिस्र उनका घर नहीं था। उन्हें याद रखना था कि कैसे परमेश्वर ने अनुग्रह के साथ उन्हें छुड़ाया था, और उन्हें मिस्र तथा मिस्रियों को बहुत पीछे छोड़ना था।

दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के आरंभिक व्यवहारों का दूसरा भाग 13:1-18 में लूत के साथ हुए विवाद की कहानी है। यह अब्राहम के दासों और लूत के दासों के बीच विवाद की एक जानी पहचानी कहानी है, जब दोनों समूह अपनी भेड़ों के लिए प्राकृतिक संसाधनों के लिए लड़ पड़े थे। इस विवाद में, अब्राहम ने लूत के साथ दयालुता का व्यवहार किया, और उसने लूत को उसके चुने हुए स्थान में शांति के साथ रहने की अनुमति दी। उत्पत्ति के मूल पाठकों को यह समझने में कोई दिक़्क़त नहीं हुई होगी कि इस कहानी का उनके लिए क्या अर्थ था। व्यवस्थाविवरण 2 के अनुसार जब वे प्रतिज्ञा के देश की ओर यात्रा कर रहे थे तो मूसा ने इस्राएलियों को लूत के वंशजों के साथ दयालुता से व्यवहार करने और उन्हें उनके पैतृक देश में शांति से रहने देने की आज्ञा दी थी। वास्तव में, लूत के प्रति अब्राहम के दयापूर्ण व्यवहार ने इस्राएलियों को दर्शाया कि उन्हें अपने समय में मोआबियों के साथ कैसा व्यवहार करना था।

दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के आरंभिक व्यवहारों की तीसरी घटना 14:1-24 में अब्राहम द्वारा लूत को बचाने की कहानी है। इस जटिल कहानी ने वर्णन किया कि कैसे अब्राहम ने उन शक्तिशाली, अत्याचारी राजाओं को हराया जो दूर से आए थे, और कैसे उसने इन अत्याचारी राजाओं से लूत को बचाने के द्वारा उसके प्रति और अधिक दया दिखाई थी। इस कहानी ने मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों से बिल्कुल स्पष्ट रूप से बात की। जब इस्राएल मोआबियों और अम्मोनियों के प्रदेशों से होकर गुजर रहा था, जो लूत के वंशज थे, तो इस्राएल की सेना ने अत्याचारी राजाओं अर्थात् अमोरियों के सिहोन, और बाशान के ओग को हराया, इन दोनों ने ही मोआबियों और अम्मोनियों को बहुत सताया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस रीति से मोआबियों और अम्मोनियों को बचाने के द्वारा इस्राएल ने उस आदर्श का पालन किया जिसे अब्राहम ने उनके लिए निर्धारित किया था।

और इस प्रकार अब्राहम के जीवन के इस चरण की प्रत्येक घटना में अब्राहम को इस्राएलियों के लिए अपने समय में पालन करने हेतु एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

परमेश्वर के साथ वाचा

अब हम अब्राहम के जीवन के तीसरे मुख्य चरण पर आते हैं, वह वाचा जो परमेश्वर ने 15:1-17:27 में अब्राहम के साथ बाँधी। सामान्य शब्दों में, यह चरण कुलपिता के साथ परमेश्वर की वाचा पर ऐसे तरीकों में ध्यान केंद्रित करता है जो परमेश्वर के साथ इस्राएल के वाचाई संबंध के चरित्र को प्रकट करते हैं। ये अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होते हैं।

15:1-21 में पाई जानेवाली पहली घटना विशेष रूप से अब्राहम के साथ की गई परमेश्वर की वाचाई प्रतिज्ञाओं पर ध्यान देती है। यह अध्याय उस समय का जाना-पहचाना वर्णन है जब परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बाँधी थी। परमेश्वर ने अब्राहम को संतान और देश देने की प्रतिज्ञा की। विशेष रूप से, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अब्राहम की अनगिनत संतान होगी, और कि परदेश में दुर्व्यवहार के समय के बाद, अब्राहम के वंशज प्रतिज्ञा के देश में वापस लाए जाएँगे। इस अनुच्छेद की रचना इस्राएलियों को यह याद दिलाने के लिए की गई थी कि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा भी ऐसी ही वाचा इस्राएल के साथ बाँधी थी। और यही नहीं, इसने उन्हें दिखाया कि वे स्वयं अब्राहम से की गईं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्णता का अनुभव कर रहे थे। इस्राएली अब्राहम के प्रतिज्ञा किए हुए वंशज थे, और वे उसी देश को लौट रहे थे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनके कुलपिता से की थी। इन तथ्यों पर संदेह करने का अर्थ था अनुग्रह के साथ की गईं उन वाचाई प्रतिज्ञाओं पर संदेह करना जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थीं और मूसा के साथ जिनकी फिर से पुष्टि की थी।

वह दूसरी घटना जो अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा पर ध्यान देती है वह 16:1-16 में हाजिरा के साथ कुलपिता की विफलता है। यह दुखद कहानी याद दिलाती है कि कैसे सारा की मिस्री दासी, हाजिरा से एक संतान को प्राप्त करने का प्रयास करने के द्वारा अब्राहम और सारा परमेश्वर की वाचाई प्रतिज्ञाओं से फिर गए थे। अब्राहम और सारा परमेश्वर की वाचाई प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने में असफल रहे, परंतु परमेश्वर ने बालक इश्माएल को अब्राहम के सच्चे वंश के रूप में स्वीकार न करके उनकी वैकल्पिक योजना को ठुकरा दिया। मूसा के मूल श्रोता वाचा में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से बार-बार पीछे हटे और उन्होंने मिस्र के सुखों को चाहा। और अब्राहम के जीवन की इस कहानी ने उन्हें सिखाया कि जैसे अब्राहम की योजना को ठुकरा दिया गया था, वैसे ही परमेश्वर की योजना के प्रति उनके विकल्पों को भी ठुकरा दिया जाएगा।

17:1-27 में अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा पर ध्यान देनेवाली तीसरी घटना अब्राहम के लिए वाचाई मांग का विवरण है। इस अनुच्छेद में परमेश्वर की योजना का पालन करने में विफल होने पर परमेश्वर ने कुलपिता का सामना किया। परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी संतानों पर लागू किए जानेवाले वाचा के चिह्न के रूप में खतने की विधि को स्थापित करने के द्वारा वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता की आवश्यकता पर फिर से बल दिया। इस चिह्न के द्वारा परमेश्वर ने अब्राहम को याद दिलाया कि उसके वाचाई संबंध में विश्वासयोग्यता की जिम्मेदारी शामिल है, और यह विश्वासयोग्यता महान आशीषों की ओर लेकर जाएगी। अपने समय में विश्वासयोग्य रहने में असफल रहे इस्राएलियों का सामना करने के लिए और इस्राएलियों के लिए वाचाई विश्वासयोग्यता की आवश्यकता पर फिर से बल देने के लिए मूसा ने अब्राहम की वाचा के इस पहलू का वर्णन किया। जब इस्राएली लोग अपने वाचाई परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे, केवल तभी वे सही अर्थों में उसकी महान आशीषों की आशा कर सकेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अतः अब्राहम के जीवन के केंद्रबिंदु, अर्थात् परमेश्वर के साथ उसकी वाचा ने इस्राएल के प्रति परमेश्वर की अद्‌भुत प्रतिज्ञाओं के अनुग्रह के प्रति ध्यान आकर्षित किया। परंतु इसने बड़े बल के साथ अपने श्रोताओं को यह याद भी कराया कि वे अपने वाचाई परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्य सेवा को प्रकट करने के लिए बाध्य थे।

दूसरे लोगों के साथ बाद के संबंध

अब हम अब्राहम के जीवन के चौथे चरण पर आते हैं : 18:1-21:34 में दूसरे लोगों के साथ उसके बाद के संबंध। इन अध्यायों में अब्राहम ने कई लोगों का सामना किया जो मूसा के समय में रह रहे लोगों के साथ संबंधित थे। अब्राहम ने सदोम और अमोरा के कनानी निवासियों, लूत, अबीमेलेक और इश्माएल के साथ व्यवहार किया। सामान्य शब्दों में, इन लोगों के साथ अब्राहम के व्यवहारों ने इस्राएल को सिखाया कि उन्हें अपने समय के कनानियों, मोआबियों और अम्मोनियों, और पलिश्तियों और इश्माएलियों के साथ कैसे व्यवहार करना है।

कुलपिता के जीवन के इस भाग की पहली कहानी 18:1-19:38 में पाया जानेवाला सदोम और अमोरा का वर्णन है। यह प्रचलित कहानी दुष्ट कनानी नगरों के विरुद्ध ईश्वरीय दंड के खतरे को बताती है। यह उन नगरों में रह रहे धर्मी लोगों के लिए अब्राहम की चिंता, और इन नगरों के विनाश तथा साथ ही लूत के बचाव के बारे में बताती है। इन घटनाओं ने मूसा के मूल श्रोताओं के सामने आनेवाली परिस्थिति से सीधे-सीधे बात की। उन्होंने उन्हें यह समझने में सहायता की कि उनके समय में रह रहे लोगों के साथ क्या हो रहा था : कनानियों के विरुद्ध परमेश्वर की चेतावनी, कनानियों के बीच रह रहे धर्मियों के प्रति जो चिंता उन्हें करनी थी (जैसे राहब जिससे वे यरीहो में मिलेंगे), वह विनाश जो कनानी नगरों के विरुद्ध निश्चित रूप से आने वाला था, और लूत के वंशजों अर्थात् मोआबियों और अम्मोनियों के साथ उनके संबंध।

दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के बाद के व्यवहारों का दूसरा भाग 20:1-18 में पाया जाता है। इस कहानी में अब्राहम ने एक बार फिर उस देश के एक निवासी, अर्थात् पलिश्ती अबीमेलेक के लिए मध्यस्थता की। आपको याद होगा कि अबीमेलेक ने यह न जानते हुए कि सारा अब्राहम की पत्नी है, सारा को अब्राहम से ले लेने के द्वारा अब्राहम के भविष्य को खतरे में डाला था। इसके बाद, परमेश्वर ने अबीमेलेक को दंड दिया, और अबीमेलेक अपने कर्मों से पश्चाताप करके धर्मी साबित हुआ। इस पश्चाताप के फलस्वरूप अब्राहम ने अबीमेलेक के लिए मध्यस्थता की, और अब्राहम तथा अबीमेलेक ने एक दूसरे के साथ स्थायी शांति और मित्रता का आनंद उठाया।

इस कहानी ने मूसा के समय के इस्राएलियों से इस विषय में बात की कि उनके अपने समय में उन्हें पलिश्तियों के प्रति कैसा व्यवहार करना है। पलिश्ती विभिन्न रूपों में इस्राएलियों के लिए खतरा बने हुए थे। परंतु जब परमेश्वर के दंड के खतरे ने पलिश्तियों में पश्चाताप को उत्पन्न किया, तो इस्राएलियों को उनके लिए मध्यस्थता करनी थी, और उनके साथ स्थायी शांति का आनंद लेना था।

21:1-21 में पाए जानेवाले इस भाग की तीसरी कहानी इसहाक और इश्माएल के बीच के मुश्किल संबंध पर ध्यान देती है। इसहाक और इश्माएल दोनों अब्राहम के पुत्र थे। परंतु जब उनके बीच तनाव बढ़ गया, तो परमेश्वर ने अब्राहम को निर्देश दिया कि वह इश्माएल को परिवार से अलग कर दे। परमेश्वर ने फिर भी इश्माएल को आशीष दी, परंतु यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि अब्राहम का सच्चा उत्तराधिकारी केवल इसहाक था। जब मूसा ने अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को इन घटनाओं के बारे में बताया तो उसने अपने समय के इश्माएलियों के साथ उनके संबंधों की प्रकृति को समझने में उनकी सहायता की। जब इस्राएल और इश्माएलियों के बीच तनाव बढ़ गया, तो इस्राएलियों को यह याद रखना था कि परमेश्वर ने उनके बीच अलगाव को ठहराया था। यद्यपि परमेश्वर ने इश्माएलियों को कई तरीकों से आशीष दी थी, परंतु फिर भी इस्राएली अब्राहम के सच्चे उत्तराधिकारी थे।

दूसरे लोगों के साथ अब्राहम के बाद के व्यवहारों की चौथी घटना 21:22-34 में अबीमेलेक के साथ अब्राहम की संधि की कहानी है। यह कहानी बताती है कि कैसे पलिश्ती अबीमेलेक ने अब्राहम के प्रति परमेश्वर की कृपादृष्टि को माना था, और कैसे अब्राहम अबीमेलेक और उसके वंशजों के साथ शांति से रहने के लिए सहमत हुआ था। यह आगे बताती है कि कैसे अब्राहम की भेड़ों के लिए पानी के अधिकारों पर विवाद उत्पन्न हुआ, और कैसे अबीमेलेक और अब्राहम ने बेर्शेबा में परस्पर सम्मान और आदर की प्रतिज्ञा करते हुए एक औपचारिक संधि स्थापित की।

अबीमेलेक और उसके सेनापति ने मूसा और इस्राएलियों को याद दिलाया कि उनके समय में पलिश्ती लोग एक बड़ा ख़तरा थे। यहाँ, मूसा ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि यदि पलिश्ती इस्राएल पर परमेश्वर की आशीष को मानते हैं, तो इस्राएल को अब्राहम के आदर्श का पालन करना चाहिए और उनके साथ शांति से रहना चाहिए। बेर्शेबा नामक कुआँ मूसा के समय में भी था, जिसने इस्राएल को वहाँ स्थापित संधि की याद दिलाई, और इस बात की भी कि कैसे उन्हें पलिश्तियों के साथ शांति और परस्पर आदर को बनाए रखना है।

अतः हम देखते हैं कि अब्राहम के बाद वाले व्यवहारों की कहानियों में ऐसे कई चरित्र शामिल थे जो उन लोगों के समान थे जिनका सामना मूसा और इस्राएलियों ने किया। अब्राहम के कार्यों को देखने के द्वारा इस्राएली अपने समय के लिए बहुत से बातों को सीख सकते थे।

वंश और मृत्यु

अब हम अब्राहम के जीवन पर मूसा के विवरण के अंतिम चरण की ओर आते हैं, अर्थात् उत्पत्ति 22:1-25:18 में उसका वंश तथा उसकी मृत्यु। ये घटनाएँ अब्राहम की विरासत पर ध्यान देती हैं, जिसने परमेश्वर के साथ उसके वाचाई संबंध को भविष्य की पीढियों तक बढ़ाया। सामान्य शब्दों में, पहली बार मूसा से इन कहानियों को प्राप्त करनेवाले इस्राएलियों को अब्राहम के उत्तराधिकारी होने के अपने स्तर के बारे में और उस आशा के बारे में सीखना चाहिए था जो उन्हें अपनी संतानों के विषय में रखनी थी।

अब्राहम के जीवन के इस भाग की पहली घटना 22:1-24 में पाई जानेवाली अब्राहम की परीक्षा की प्रचलित कहानी है। इस परीक्षा को यह निर्धारित करने के लिए रचा गया था कि क्या अब्राहम अपने पुत्र इसहाक से अधिक परमेश्वर से प्रेम करता था। परमेश्वर ने एक कठिन परीक्षा आरंभ की जिसमें उसने अब्राहम को अपने पुत्र की बलि चढ़ाने के लिए कहा। अब्राहम ने आज्ञा का पालन किया, और परमेश्वर ने अब्राहम को आश्वस्त किया कि उसके आज्ञा-पालन के फलस्वरूप इसहाक का भविष्य बहुत उज्ज्वल होगा।

यद्यपि मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों के लिए इस कहानी के अनगिनत निहितार्थ थे, परंतु इस अनुच्छेद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर अपने प्रति इस्राएल राष्ट्र की विश्वासयोग्यता की गहराई को देखने के लिए उनकी परीक्षा ले रहा था। मूसा के समय में परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र की कई परीक्षाएँ ली थीं। और अपनी परीक्षा के प्रति अब्राहम के आज्ञा-पालन ने उन्हें अपनी परीक्षाओं के आज्ञा-पालन की आवश्यकता को याद दिलाया, फिर चाहे वे कितनी भी कठिन क्यों न हों। और अब्राहम की संतानों के रूप में इसहाक के उज्ज्वल भविष्य की पुष्टि ने इस्राएलियों को उस उज्ज्वल भविष्य की याद दिलाई जो वे स्वयं प्राप्त करेंगे यदि वे इन परीक्षाओं में सफल रहते हैं।

अब्राहम के जीवन के अंतिम चरण की दूसरी घटना 23:1-20 में पाई जानेवाली वह कहानी है जिसमें कुलपिता कब्रिस्तान की भूमि खरीदता है। यह कहानी दर्शाती है कि जब अब्राहम की पत्नी सारा की मृत्यु हो गई थी तो कैसे उसने हेब्रोन में अपने परिवार के लिए एक कब्रिस्तान को खरीदा। यह कहानी बल देती है कि कुलपिता ने इस संपत्ति को उपहार-स्वरूप स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसने इसे मूल्य चुकाकर खरीदा। संपत्ति की इस खरीद ने कनान देश को अपनी मातृभूमि के रूप में देखने के उसके परिवार के कानूनी अधिकार को स्थापित किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएली अपने जीवनों के लिए ख़रीदे गए इस कब्रिस्तान के महत्व और निहितार्थों को समझ गए थे। यह उनका पैतृक कब्रिस्तान था। अब्राहम, इसहाक और याकूब सब यहीं गाड़े गए थे। वे समझ गए थे कि उस देश पर विजय पाने से पहले ही यह उनकी कानूनी संपत्ति थी। अब्राहम, इसहाक और याकूब ने हेब्रोन में और उसके आसपास अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया था। इस्राएली अपनी पैतृक मातृभूमि के रूप में हेब्रोन के प्रति इतने समर्पित थे कि वे कुलपिता याकूब की हड्डियों को भी गाड़ने के लिए वापस हेब्रोन ले गए थे। अब्राहम द्वारा ख़रीदे गए कब्रिस्तान के बारे में यह कहानी दर्शाती है कि उसके वंशजों के लिए कनानियों के देश के अतिरिक्त और कोई उचित स्थान नहीं था।

अब्राहम की संतान और मृत्यु की तीसरी घटना अब्राहम की पुत्रवधू रिबका के बारे में एक भावुक कहानी है, जो 24:1-67 में उसके विशेष पुत्र इसहाक की पत्नी बनी। इस कहानी में यह सुनिश्चित करने के लिए कि इसहाक कनानी भ्रष्टता से बचे, अब्राहम ने बल देकर कहा कि इसहाक कनानी स्त्री से विवाह नहीं करेगा। परंतु अब्राहम ने इसहाक के लिए पत्नी लाने के लिए अपने सेवक को भेजने के द्वारा यह भी सुनिश्चित किया कि इसहाक कनान देश, अर्थात् प्रतिज्ञा के देश में ही बना रहे। इस रीति से इसहाक के लिए पत्नी ढूंढने के द्वारा अब्राहम ने इसहाक और उसके वंशजों के लिए परमेश्वर की ओर से आशीषों के एक महान भविष्य को सुनिश्चित किया।

मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों ने इस कहानी से यह सीखा होगा कि इसहाक, अर्थात् अब्राहम के साथ उनका पैतृक संबंध, कनान को ही मातृभूमि बनाए रखने के बावजूद कनानी भ्रष्टता से शुद्ध बना रहा। इसहाक का आशीषों से भरा उज्जवल भविष्य उनका भी भविष्य होगा, जब तक वे भी प्रतिज्ञा के देश में रहनेवाले कनानियों की भ्रष्टता से बचे रहते हैं।

अब्राहम के जीवन की अंतिम घटना 25:1-18 में पाई जानेवाली कुलपिता की मृत्यु और उत्तराधिकार की कहानी है। कई संक्षिप्त विवरणों का यह संग्रह सारा के अतिरिक्त दूसरी पत्नियों से अब्राहम के पुत्रों को सूचीबद्ध करता है। फिर वह कुलपिता की मृत्यु को दर्शाता है, जिस दौरान अब्राहम के कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में इसहाक अब्राहम के अंतिम आशीर्वाद को प्राप्त करता है। अंततः यह एक विरोधाभासी अनुच्छेद के साथ समाप्त होता है जो संक्षिप्त रूप से इश्माएल के वंशजों का वर्णन करता है।

अब्राहम के जीवन की इस समाप्ति के मूल श्रोताओं के लिए कई निहितार्थ थे। इसने अब्राहम के दूसरे पुत्रों को सूचीबद्ध किया कि उन्हें इस्राएलियों से अलग करके दिखाए। इसने मूसा का अनुसरण कर रहे इस्राएलियों को आश्वस्त करने के लिए इसहाक पर अब्राहम के अंतिम आशीर्वाद को दर्शाया कि वे अब्राहम की प्रतिज्ञाओं के सच्चे उत्तराधिकारी थे। और इसने इश्माएल के वंशजो का उल्लेख ऐसे किसी भी दावे को निरस्त करने के लिए किया जो इश्माएली अब्राहम की विरासत पर कर सकते थे। अब्राहम के जीवन की कहानी को इस रीति से समाप्त करने के द्वारा मूसा ने अब्राहम के उन सच्चे वंशजों अर्थात् इस्राएलियों की पहचान, अधिकार और जिम्मेदारियों को स्थापित किया, जिनकी अगुवाई वह प्रतिज्ञा के देश की ओर जाने में कर रहा था।

अतः हम देखते हैं कि मूसा ने अब्राहम के जीवन के बारे में अपनी कहानियों को इसलिए लिखा कि वह अपना अनुसरण कर रहे इस्राएलियों को सिखा सके कि उन्हें क्यों और कैसे मिस्र देश को पीछे छोड़ना है और प्रतिज्ञा के देश पर विजय पाने की ओर आगे बढ़ना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए मूसा ने कुलपिता के जीवन की प्रत्येक घटना में विभिन्न तरीकों से बल दिया कि कैसे वे कुलपिता को दिए गए अनुग्रह के उत्तराधिकारी थे, कैसे वे कुलपिता के समान परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने के प्रति जिम्मेदार थे, कैसे वे अब्राहम के समान आशीषों को प्राप्त करेंगे, और कैसे वे एक दिन संसार की सब जातियों को आशीष देंगे। अब्राहम के जीवन के बारे में मूसा के विवरण में उन इस्राएलियों के लिए अनगिनत निहितार्थ थे, जो प्रतिज्ञा के देश की ओर जाने में उसका अनुसरण कर रहे थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम के जीवन के विवरण के मूल अर्थ को देखा है। और हमने इस मूल अर्थ को खोजने के लिए दो मुख्य दिशाओं की ओर देखा है : एक ओर हमने उन संबंधों की जाँच की है जिन्हें मूसा ने इन कहानियों और उन इस्राएलियों के अनुभवों के बीच स्थापित किया जिनके लिए उसने इन्हें लिखा था। और दूसरी ओर, हमने देखा कि अपने मूल श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए मूसा ने अपनी कहानियों की रचना कैसे की, जब वे मिस्र देश को पीछे छोड़कर और कनान पर विजय पाने के लिए आगे बढ़ रहे थे।

जब हम उन संबंधों के बारे में जिन्हें मूसा ने अब्राहम और अपने मूल इस्राएली पाठकों के बीच स्थापित किए, और उस प्रभाव के बारे में और अधिक सीखते हैं जिसकी अपेक्षा उसने अपने श्रोताओं पर अपनी कहानी के द्वारा की थी, तो हम देखेंगे कि कैसे अब्राहम के जीवन की प्रत्येक घटना का उद्देश्य इस्राएलियों का मार्गदर्शन करना था। और हम यह भी बेहतर रीति से समझ सकेंगे कि आज हमारे जीवनों पर ये कहानियाँ कैसे लागू होनी चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।